# विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव

भावेश चंद्र दुबे*

**शिक्षा मानव जगत की धरोहर है जिससे समाज के विकास की सही दिशा व दशा निर्धारित की जाती है। प्रत्येक आवश्यकता मनुष्य में भावनाओं से जुड़कर कर्म का निर्धारण करती है तथा मनुष्य समायोजन द्वारा अपने को स्थिर एवं संतुष्ट रखता है। मनुष्य को किसी कार्य के प्रति अभिप्रेरित कर उसके समायोजन स्तर को बढ़ाया जा सकता है लेकिन अगर कोई व्यक्ति किसी कार्य के प्रति अभिप्रेरित नहीं होता है तो उसके समायोजन को बनाये रख पाना बड़ा ही मुश्किल होता है। देश के विभिन्न राज्यों में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धियाँ चिन्ता का कारण बनी हुई हैं। यह शास्वत सत्य है कि जिस देश में जिस प्रकार के शिक्षकों का निर्माण होता है वह शिक्षक भी उसी तरह के समाज का निर्माण करते हैं 'शिक्षक समाज का दर्पण हैं'। अध्ययन से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा और समायोजन के मध्य सार्थक संबंध हैं। विद्यार्थियों को मिलने वाली शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके विद्यालय में अच्छे समायोजन तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सहायक होती है। शैक्षिक अभिप्रेरणा द्वारा विद्यार्थियों की असमायोजन असफलता और निम्न शैक्षिक उपलब्धि की समस्या को सुलझाया जा सकता है तथा शिक्षा के अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।**

मानवीय जीवन आवश्यकताओं एवं भावनाओं का मेल है, प्रत्येक आवश्यकता मनुष्य में भावनाओं से जुड़कर क्रम का निर्धारण करती है तथा मनुष्य समायोजन के द्वारा अपने को स्थिर एवं संतुष्ट रखता

*18 A/C उदित महानगर (पानी की टंकी के पास),बरेली, उत्तर प्रदेश

है। मनुष्य जब इस पृथ्वी पर आता है तो उसकी एक ही आवश्यकता होती है केवल भूख। लेकिन जैसे-जैसे इस संसार से संबंध जोड़ता जाता है वैसे-वैसे उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती जाती हैं। अत: उन आवश्यकताओं को पूर्ण करने एवं उसके साथ समायोजन बैठाने के लिए मनुष्य के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक विकास आवश्यक है जो केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है, डॉ. एस. राधाकृष्णन के शब्दों में—

> *"शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं है न यह विचारों की समर्थन स्थली है और न ही नागरिकता की पाठशाला है। यह आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश की दीक्षा है, सत्य की खोज में लगी मानव आत्मा का प्रशिक्षण है।"*

इस प्रकार शिक्षा मानव के सर्वागीण विकास का आधार है। अत: शिक्षा मानव में मानवता का विकास करने का साधन है। जिससे मनुष्य की पशुता को दूर कर सामाजिक मान्यताओं एवं परंपराओं को परिष्कृत कर सामंजस्य बैठाया जा सकता है। इसलिए शिक्षा को प्राण वायु कहा गया है। यही शिक्षा समाज की प्रेरणा है उसकी ऊर्जा है। इसी आधार पर राष्ट्र का भविष्य उसके द्वारा प्राप्त किये गए शैक्षिक स्तर पर निर्भर करता है। शैक्षिक स्तर का संबंध इससे है कि हमारे विद्यालयों में क्या और कैसे पढ़ाया जा रहा है। हमारे विद्यालयों से बच्चों का पलायन आज भी जारी है जिससे हम अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या से जूझ रहे हैं इसके कई कारण विद्यमान हैं जैसे—पाठ्यचर्या का अरुचिकर व एक मार्गोय होना, छात्रों को करके सीखने का अवसर कम उपलब्ध होना। इसके साथ ही शिक्षकों का अभाव तथा शिक्षकों का प्रेरणा तथा कर्तव्य भावना से विमुख होना भी इसके मुख्य कारण हैं। इसलिए विद्यालय स्तर पर बहुत से विद्यार्थियों को असफलता प्राप्त होती है। अधिकाँश शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का उद्देश्य केवल प्रमाण-पत्र प्राप्त करने से होता है और वह अपने प्रशिक्षण विद्यालय के साथ समायोजन इस स्तर तक बनाते हैं। कि उन्हें बिना किसी प्रयास के प्रमाण-पत्र प्राप्त हो जाए। अब प्रश्न यह है कि जिस विद्यार्थी की शैक्षिक अभिप्रेरणा सकारात्मक है तथा उसका समायोजन सकारात्मक है, उसका उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है यह एक जाँच का प्रश्न है। शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि अर्थात् अपने प्रशिक्षण में पारंगत न होना, यह पूरे समाज के सामने एक कठिन प्रश्न खड़ा करता है। जैसे विद्यालयों में भौतिक संसाधनों के होते हुए भी सार्थक परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहें हैं। हमारे भारतीय समाज से नैतिक मूल्य, संस्कृति, धर्मपरायणता, कर्तव्यपरायणता इत्यादि जैसे शब्दों से विश्वास उठता चला जा रहा है।

देश के विभिन्न राज्यों में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियो की निम्न शैक्षिक उपलब्धि और विफलता का घटना क्रम सम्पूर्ण देश के शिक्षाविदों, शिक्षकों, निर्देशनप्रदाताओं एवं परामर्शदाताओं तथा शैक्षिक नियोजनकर्त्ताओं के लिए गम्भीर चिंता का कारण बना हुआ है। यह शास्वत सत्य है कि जिस देश में जिस प्रकार के शिक्षकों का निर्माण होता है

वह शिक्षक भी उसी तरह के समाज का निर्माण करते हैं। 'शिक्षक समाज का दर्पण है'। लेकिन दर्पण की सफाई ठीक से न हो तो वह तस्वीर को साफ नहीं दिखाएगा ठीक यही व्यवस्था समाज के साथ जुड़ी है अगर शिक्षक का प्रशिक्षण उपयुक्त ढंग से न हो तो वह समाज का निर्माण अधूरा करेगा, तथा समाज में असंतोष, भ्रष्टाचार तथा व्यभिचार जैसी कुरितियाँ फैल जायेंगी।

***पूर्व में किये गये शोध***—विल्सन एफ.एच. (1976) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं उनकी उच्च शैक्षिक उपलब्धि उनके माता-पिता की उनके शैक्षिक मामलों या कार्यों में रुचि से जुड़ी हुई हैं। गरीगोटोय एस.एम. (1984) ने पाया कि माता-पिता की विशेषताओं तथा व्यवहार का प्रभाव बालकों के समायोजन पर पड़ता है। सक्सेना वन्दना (1988) ने पाया कि विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संबंध रखने वाले विद्यार्थियों के सामयोजन, अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। गर्ग चित्रा (1992) ने पारिवारिक संबंधों, सामाजिक आर्थिक स्थिति, बुद्धि तथा विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक संबंध पाया। अग्रवाल, रेखा (1998) ने पाया कि माता-पिता द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पथ प्रदर्शन बालकों के अधिक अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोण एवं शैक्षिक उपलब्धि में योगदान करता है। अग्रवाल, कुसुम (1999) ने पाया कि असफल एवं उपेक्षित विद्यार्थियों का समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न था। उनके अनुसार अभिभावकों का व्यवहार विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करता है। कुमार, सुभाष (2003) ने पाया कि माता-पिता का विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता का प्रभाव समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। ज्ञानानी (2003) ने पाया कि विद्यार्थियों को मिलने वाली अभिप्रेरणा तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक संबंध होता है। त्रिपाठी, कुमुद (2004) ने पाया कि विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि प्रेरणा का अधिक प्रभाव पड़ता है, जबकि लिंग व परिवेश का प्रभाव नहीं पड़ता है। विद्या प्रतिभा (2006) ने पाया कि विद्यार्थियों में तनाव का 40% कारण विद्यालय है। बालिकाएँ भारतीय परिप्रेक्ष्य में संकीर्ण होती हैं। इसलिए वे गुरुजनों एवं सहपाठियों से तुरन्त घुल-मिल नहीं पाती हैं। साथ ही पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भी कम ही भाग ले पाती हैं जबकि बालकों के साथ ऐसा नहीं है। विद्यालयी गतिविधियों में वह बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। पंवार एवं उनिपाल (2008) ने पाया कि बालक-बालिकाओं के पारिवारिक, सामाजिक, स्वास्थ्य एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि विद्यालयी समायोजन में सार्थक अन्तर है।

***अध्ययन का औचित्य***—समाज का निर्माणकर्त्ता शिक्षक होता है तथा समाज ने शिक्षक का निर्माण करने हेतु शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थानों का संचालन कर रखा है लेकिन अगर प्रत्येक शिक्षक-प्रशिक्षण कालेजों का अवलोकन किया जाय तो यह विदित होता है कि धीरे-धीरे शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में कर्तव्यबोधता खत्म हो रही है। यह जानना आवश्यक है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थी में अगर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का स्तर ठीक हो तो उनकी उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है इसकी जानकारी

प्राप्त हो जाए तो उपलब्धि स्तर के माध्यम से विद्यार्थी के समायोजन तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा का पता लगाया जा सकता है।

***अध्ययन का शीर्षक***—विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव।

## अध्ययन के उद्देश्य

- विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा तथा समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना।

## परिकल्पनाएँ

- विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा उनके समायोजन के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।
- विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

***प्रतिदर्श***—प्रस्तुत अध्ययन हेतु हरियाणा शिक्षा बोर्ड की कक्षा 12 के 60 विद्यार्थियों को लिया गया। प्रतिदर्श का चयन यादच्छिक प्रतिचयन के आधार पर किया गया।

***उपकरण***—शैक्षिक अभिप्रेरणा के अध्ययन हेतु टी. आर. शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक एचीवमेन्ट मोटीवेशन टेस्ट' का प्रयोग किया गया। समायोजन के अध्ययन हेतु ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित 'एडजेस्टमेंट इंवेंटरी फार स्कूल स्टेडेंट का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में विद्यार्थियों के कक्षा 11 के प्राप्ताँको को लिया गया।

***प्रदत्त विश्लेषण***—संग्रहीत प्रदत्तों से निष्कर्ष निकालने हेतु कार्ल पीयरसन द्वारा प्रतिपादित 'गुणनफल आघूर्ण विधि', से चारों के मध्य सह-संबंध की गणना की गयी।

**परिणाम एवं विवेचना**—प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हरियाणा राज्य के उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह-संबंध ज्ञात करना था। अध्ययन की सुविधा के लिए शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाँकों के आधार पर विद्यार्थियों को निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह, उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह में रखा गया।

तालिका 1

**निम्न अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा (x) एवं समायोजन (y) के मध्य सह संबंध गुणाँक**

| *फलांकों का योग (Sum of scores) scores)* | | *मध्यमान (mean)* | | *वर्गों का योग (Sum of squares)* | | *गुणनफल का योग (Sum of multiplication)* | *सह संबंध गुणाँक (Coefficient of correlation)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Ex | Ey | x⁻ | y⁻ | $Ex^2$ | Ey | Exy | (r) |
| 814.00 | 401.00 | 27.13 | 13.36 | 17726 | 290.68 | −174.45 | −0.76 |

उपरोक्त तालिका विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाँकों तथा समायोजन के फलांको के मध्य सह-संबंध गुणाँक (r) का मान –0.76 है। इससे स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं समायोजन के मध्य उच्च सह संबंध है।

तालिका 2

**उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा (x) एवं समायोजन (y) के मध्य सह संबंध गुणाँक**

| *फलांको का योग (Sum of scores)* | | *मध्यमान (mean)* | | *वर्गो का योग (Sum of squares)* | | *गुणनफल का योग (Sum of multiplication)* | *सह संबंध गुणाँक (Coefficient of correlation)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Ex | Ey | x⁻ | y⁻ | $Ex^2$ | Ey | Exy | (r) |
| 992.00 | 230.00 | 33.06 | 07.66 | 83.76 | 280.50 | –86.41 | –0.56 |

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाँकों तथा समायोजन फलांकों के मध्य सह-संबंध गुणाँक (r) का मान –0.56 है जिससे स्पष्ट होता है कि उच्च अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन के मध्य सामान्य सह-संबंध है।

***विवेचना***—तालिका 1 तथा 2 शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं समायोजन के फलाँको के मध्य उच्च तथा सामान्य ऋणात्मक सह-संबंध को प्रदर्शित करती है। अर्थात् शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाँकों में वृद्धि होती है तो समायोजन के फलाँकों में कमी होती है। समायोजन अनुसूची की अँकन विधि के अनुसार फलाँकों की कम मात्रा अधिक समायोजन को प्रदर्शित करती है। अत: इसका अर्थ है कि अगर शैक्षिक अभिप्रेरणा अधिक है तो विद्यार्थी का समायोजन भी अधिक होगा और अगर शैक्षिक अभिप्रेरणा कम है तो विद्यार्थी का समायोजन भी कम होगा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा और समायोजन के मध्य सार्थक संबंध है।

तालिका 3

**निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा (x) एवं शैक्षिक उपलब्धि (y) के मध्य सह संबंध गुणाँक**

| *फलांको का योग (Sum of scores)* | | *मध्यमान (mean)* | | *वर्गो का योग (Sum of squares)* | | *गुणनफल का योग (Sum of multiplication)* | *सह संबंध गुणाँक (Coefficient of correlation)* |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Ex | Ey | x⁻ | y⁻ | $Ex^2$ | Ey | Exy | (r) |
| 814.00 | 10507.00 | 27.13 | 350.23 | 117.26 | 12545.28 | 1167.86 | 0.78 |

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के फलाँकों एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलांकों के मध्य सह-संबंध गुणाँक (r) का मान 0.78 है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च सह-संबंध है।

तालिका 4

**उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा (x) एवं शैक्षिक उपलब्धि (y) के मध्य सह संबंध**

| फलांकों का योग (Sum of scores) | | मध्यमान (mean) | | वर्गो का योग (Sum of squares) | | गुणनफल का योग (Sum of multiplication) | सह संबंध गुणाँक (Coefficient of correlation) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Ex | Ey | x⁻ | y⁻ | $Ex^2$ | Ey | Exy | (r) |
| 992.00 | 12211.00 | 33.06 | 407.03 | 83.76 | 30446.94 | 1345.91 | .84 |

उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक अभिप्रेरणा समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के फलांको एवं शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाँकों के मध्य सह-संबंध गुणाँक (r) का मान 0.84 है। इससे वह निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च सह-संबंध है।

***स्पष्टीकरण***—तालिका 3 और 4 शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के फलाँकों के मध्य उच्च तथा अति उच्च धनात्मक सह-संबंध को प्रदर्शित करती है अर्थात शैक्षिक अभिप्रेरणा के फलाँकों में वृद्धि होती है तो शैक्षिक उपलब्धि के फलाँकों में भी वृद्धि होती है अत: इससे यह सिद्ध होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा अधिक होती तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी ज्यादा होगी अगर जिन विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा कम होगी तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी कम होगी। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध है।

***निष्कर्ष एवं सुझाव***—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह-संबंध होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। जब विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा उच्च स्तर की होती है तो उनके समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी उच्च होता है।

अध्ययन के परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों को मिलने वाली शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके विद्यालय में अच्छे समायोजन तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सहायक होती है। अत: अध्यापकों, अभिभावकों, परामर्श दाताओं एवं निर्देशन कार्यकर्त्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं के समाधान में उनकी सहायता करें तथा विद्यार्थियों को इस प्रकार अभिप्रेरित करें कि वे विद्यालय एवं आसपास के वातावरण के साथ उपयुक्त समायोजन करते हुए उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त करें। शैक्षिक अभिप्रेरणा द्वारा विद्यार्थियों की असमायोजन, असफलता और निम्न शैक्षिक उपलब्धि की समस्या को सुलझाया जा सकता है तथा शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

## संदर्भ

गर्ग, चित्र. 1992. "ए स्टडी ऑफ़ फैमिली रिलशन सोशियों इकोनामिक स्टेट्स इंटेलीजेंस एंड एडजस्टमेंटऑफ़ फेल्ड हाईस्कूल स्टूडेंट्स" *फिफ्थ सर्वे ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च,* वाल्यूम-1728-730

पंवार, एस. 2008. 'उच्च प्राथमिक स्तर के बालक बालिकाओं के समायोजन एवं माता-पिता का उनके प्रति व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन *प्राथमिक शिक्षक*, वर्ष 33 अँक 1, जनवरी 2008

प्रतिभा, सी.एस. 2006. "रोल ऑफ पेरेंट्स इन हेल्पिंग एडोलसेट्स विद स्ट्रेस" *एक्सपैरिमेंट इन एजुकेशन,* वाल्यूम 34 नं. 8 पेज 165

सिंह, एस.के. 2007. 'प्राथमिक शिक्षा : बुनियादी आवश्यकता', *कुरुक्षेत्र,* वर्ष 53 अँक 11, सितम्बर 2007

त्रिपाठी, कुमुद. 2004. "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव" एक अध्ययन, *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका,* वर्ष 23, अँक 1, जनवरी- जून 2004